VISION IAS

www.visionias.in

SUBJECT:	ESSAY	**Test Code:**	2 1 2 3
Name of Candidate	Pooja Meena		
Medium Hindi/Eng.	Hindi	**Registration Number**	1 5 4 3 5 0
Center	online	**Date**	0 8 0 8 2 2

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Content Competence
3. Language Competence
4. Introduction Competence
5. Structure - Presentation Competence
6. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

बुराई के साथ असहयोग उतना ही कर्तव्य परायण है, जितना कि अच्छे के साथ सहयोग।

अपने कमरे की सफाई करते हुए 'कुमरा' को अपने दादा द्वारा दी गई कुछ चिट्ठियाँ प्राप्त हुई। चिट्ठियों में दादाजी ने कहानियों के माध्यम अच्छाई व बुराई के मध्य संतुलन स्थापित करने की सीख देने का प्रयास किया।

इसी प्रकार की एक कहानी है:-

"शहर में सर्वाधिक बौद्धिक प्राणी होने की प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। शहर के युवाओं द्वारा इसमें भाग लिया जाता है, किन्तु कोई भी इसमें सफल नहीं जीत हो पाता है। असफलता का कारण था कि सभी को प्रश्नों के उत्तर देने के बाद अगले कुछ दिनों तक मौन रहने, भूखे रहने इत्यादि परीक्षाएँ देनी थी, जिसके अन्तर्गत कोई

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

सफल नहीं हो पाता है।"

दादा जी अंत में कहानी की शिक्षा बताते हुए कहते हैं कि सभी प्रतियोगियों द्वारा अपनी-अपनी सकारात्मक शक्तियों के साथ अभ्यास किए गए। किसी ने भी अपनी नकारात्मक भावनाओं यथा भूख, राग, द्वेष इत्यादि पर नियंत्रण की अवहेलना की।

उपर्युक्त दृष्टांत के माध्यम से निबंध के आगामी खंडों में बताया जाएगा कि अच्छाई के साथ सहयोग एवं बुराई के साथ असहयोग दोनों समानांतर चलने वाली क्रियाएँ होती हैं।

अच्छे के साथ सहयोग के साथ बुराई के साथ असहयोग करना कर्तव्यनिष्ठा का परिचायक है। एक की भी उपेक्षा व्यक्तिगत या सामाजिक

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

विशृंखला उत्पन्न कर सकता है।

सर्वप्रथम जानेंगे कि अच्छे के साथ सहयोग एवं बुराई के साथ असहयोग से क्या तात्पर्य है और इनका समन्वय क्यों आवश्यक है?

समन्वय बताने से पूर्व शीर्षक में अच्छाई व बुराई के साथ क्रमशः सहयोग व असहयोग की क्रिया के अन्तर्गत व्यक्ति या समाज द्वारा स्वयं को विकास की ओर अग्रसर होने एवं अवनति से बचने का प्रयास किया जाता है।

व्यक्तिगत उदाहरण के तौर पर इसे समझा जा सकता है। एक यूपीएससी अभ्यर्थी द्वारा परीक्षा से संबंधित सभी पाठ्यक्रम की तैयारी की जाती है। परीक्षा के दौरान अपनी नकारात्मक भावनाओं यथा चिन्ता, क्रोध

Don't write anything in this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इत्यादि के साथ असहयोग न कर पाने के कारण वह परीक्षा में सफल नहीं हो पाता। इसी प्रकार के कई उदाहरण समाज में देखने को मिलते है।

सामाजिक स्तर पर समाज एक तरफ कानूनी स्तर पर कई कानूनों को अपनाए हुए है जैसे घरेलू हिंसा अधिनियम, मैन्युअल स्कैवेंजिंग निषेध अधिनियम, ई-अपशिष्ट प्रबंधन नियम इत्यादि। दूसरी तरफ पितृसत्तात्मक सोच, अस्पृश्यता एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता का अभाव विद्यमान है।

पर्यावरणीय स्तर पर विभिन्न प्रकार के समझौते, सम्मेलन एवं कन्वेंशन का आयोजन किया गया जैसे पेरिस जलवायु समझौता, क्लाइमेट

सम्मेलन, इत्यादि। दूसरी तरफ औद्योगिकीकरण से हानि, शहरीकरण, सतत विकास की अवहेलना, कार्बन उत्सर्जन में अधांधुंध तेजी इत्यादि कथनी व करनी में अंतर को प्रकट करती है।

व्यक्तिगत, सामाजिक एवं पर्यावरणीय स्तर पर विभिन्न उदा-हरणों के माध्यम से हमने जाना कि क्यों अच्छे व बुराई के मध्य संतुलन आवश्यक है।

इसी प्रकार के संतुलन की अपेक्षा प्रशासनिक स्तर पर की जाती है। प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा नोलन समिति एव प्रशास-निक सुधार आयोग द्वारा नैतिक सिद्धान्तों के अनुपालन की अनुशंसा की है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

- उपर्युक्त वर्णित सिद्धान्तों के साथ सहयोग तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक भाई-भतीजावाद भ्रष्टाचार एवं लालफीताशाही जैसी 'औपनिवेशिक विरासतों' को त्यागा न जाए।

वर्तमान का युग तकनीकी-प्रौद्योगिकी एवं सोशल मीडिया का युग कहा जाता है। सोशल मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों को समन्वित कर जनता को जागरूक किए जाने की आवश्यकता है। इसी को देखते हुए हाल में नए ओटीटी / दूरसंचार नियामकीय नियम लाए गए।

यदि अच्छाई व बुराई के मध्य समन्वय स्थापित नहीं किया जाए तो

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

व्यक्तिगत, सामाजिक एवं वैश्विक तीनों स्तर पर विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न होने का खतरा है।

महाभारत के अभिमन्यु के शिकार के सहायता से इसे समझा जा सकता है। अभिमन्यु को चक्र तोड़ कर अंदर जाना आता है, लेकिन चक्र के बाहर कैसे निकल कर आना है, इसका ज्ञान नहीं था। इस अधूरे ज्ञान का परिणाम अभिमन्यु की मृत्यु के रूप में प्राप्त हुआ।

इंसानी सभ्यता की भी स्थिति विनाश की ओर जा सकती है यदि उसने सृजनता व विनाशशीलता के मध्य समन्वय स्थापित न कर लिया। वर्तमान में विभिन्न प्रकार की समस्याएँ देखने को मिल रही हैं; ये सभी अपूर्ण

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

समन्वय का ही परिणाम है।

सामंजस्य पूर्ण एवं संतुलन की स्थापना कैसे की जा सकती है? अच्छाई के साथ सहयोग को निरंतर बनाए रखना एवं बुराई के साथ असहयोग स्थापित रखने हेतु क्या- क्या किए जाने की आवश्यकता है?

व्यक्तिगत स्तर पर प्रायः यही सिखाया जाता है कि सच बोलना चाहिए, मेहनत करना चाहिए किन्तु यह कम ही बताया जाता है कि झूठ बोलने की स्थिति में आलस्य आने की स्थिति में हम दो विरोधाभासी भावनाओं को कैसे संतुलित करें।

वर्तमान में मनोरोगियों की बढ़ती संख्या, चिंता, कुराशा इत्यादि

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

के बढ़ते कैसे वसी अपूर्ण सामंजस्य का परिणाम मानी जा सकती है।

सामाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार, शिक्षण संस्थान एवं समाज की भूमिका एक महत्वपूर्ण आधार होती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण, सामाजिक सामंजस्य इत्यादि के साथ-साथ मानसिक व्यायाम, योग, पुस्तकों का अध्ययन भी सामंजस्यपूर्ण जीवन की स्थापना में सहायक हो सकेंगे।

वैयक्तिक स्तर के बाद सामाजिक स्तर पर कानूनी प्रक्रिया का जटिल व कठोर प्रवर्तन, नीति-निर्माण में जन-सहभागिता को सुनिश्चित कर सामाजिक सौहार्द इत्यादि के माध्यम से सामाजिक समस्याओं का समाधान किया जा सकेगा।

उदाहरण के लिए 'स्वच्छ भारत मिशन' के तहत स्कूलों में शौच हेतु

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

शौचालय का निर्माण, अच्छाई के साथ सहयोग है, किन्तु खुले में शौच अभी भी जारी है, ऐसे में जन-सहभागिता व कठोर कानूनी प्रवर्तन जरूरी हो जाता है।

इसी तरह प्रशासनिक स्तर पर विभिन्न प्रकार की आचरण संहिता (केन्द्रीय आचरण संहिता) में संशोधन कर, अनैतिक व असामाजिक गतिविधियों को नियंत्रित किया जा सकेगा।

उपर्युक्त विभिन्न पक्षों को जानने के बाद कहा जा सकता है कि यदि सिर्फ अच्छाई के साथ सहयोग किया जाए तो भी समाज में प्रगति नहीं। और यदि सिर्फ बुराई के साथ असहयोग किया जाए तो

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भी यह साकार नहीं होगा।

समावेशी एवं संधारणीय विकास की प्राप्ति हेतु आवश्यक है सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पहलुओं पर समानांतर रूप से कार्य किए जाए।

निबंध के सभी खंडो पर चर्चा करने के बाद पुन: कुमरा के दादाजी के पत्रों पर चर्चा करना अपेक्षित है। यदि प्रतियोगिता के सहभागियों में से एक ने बौद्धिक के साथ शारीरिक व्यायाम एवं संवेगात्मक पक्ष पर भी बल दिया होता अर्थात अपनी कमजोरियों को ध्यान में रखकर प्रयास किया होता, तो निश्चित, प्रतियोगिता की विजेता की प्राप्ति होती।

वर्तमान में प्रमुख समस्या यही हो गई है। एक तरफ धूम्रपान एवं शराब का सेवन करना, दूसरी तरफ जिम में जाकर व्यायाम करना।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

यह सिर्फ अच्छे के साथ सहयोग को प्रदर्शित करता है, बुराई के साथ तो अभी भी सहयोग कायम है। इसी असंतुलन का परिणाम है कि गैर-संक्रामक एवं मानसिक बीमारियों की संख्या में वृद्धि हुई है।

स्वस्थ एवं सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि अच्छे के साथ सहयोग के साथ-साथ बुराई के साथ असहयोग भी निरंतर बना रहे। इसके लिए निरंतर अभ्यास एवं दृढ़-निश्चय की आवश्यकता है। इसकी स्थापना से →

("सर्वे भवन्तु सुखिन, सर्वे सन्तु निरामया")

का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकेगा।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

- अच्छाई-बुराई के मध्य संतुलन
- न अकेला अच्छाई

VISION IAS™ कौन से क्षेत्र

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

व्यक्तिगत < ~~बुराई → लोभ, हिंसा, आलसी, स्वार्थी, अहंकार~~
अच्छाई → एमसरसाइज, अध्ययन

समाज < जातिवाद, ठोस अपशिष्ट, लैंगिक हिंसा
सहिष्णुता, पर्यावरणीय, लैंगिक समानता

राजनीतिक <

- रामायण
- महाभारत
-

[Main Body] → अच्छाई ~~-बुराई के मध्य संतुलन की बात~~
(उदाहरण)

Intro

- ~~सिर्फ बुराई के साथ असहयोग पर्याप्त नहीं~~
- ~~सिर्फ अच्छे के साथ सहयोग भी पर्याप्त नहीं~~

दादा का पोती को पत्र

[Main Body] → बुराई के साथ-साथ अच्छाई का संतुलन

- बुराई के साथ असहयोग से क्या तात्पर्य
- अच्छाई के साथ सहयोग से क्या
- दोनों का समन्वय क्यों आवश्यक

व्यक्तिगत → एक्सरसाइज, UPSC aspirant
सामाजिक → समाज, पर्यावरण, भ्रष्टाचार
प्रशासनिक → कार्य संस्कृति, भ्रष्टाचार
वैश्विक स्तर → राजनीतिक, पर्यावरणीय, आर्थिक

- UPSC aspirant
- वेस्ट मैनेजमेंट
- मैनुअल स्कैवेंजिंग
- पर्यावरण
- लैंगिक मुद्दा
- प्रशासनिक
- आर्थिक
- आतंकवाद
- तकनीक-प्रौ

- समन्वय नहीं होने पर समस्या → कचरा सड़क पर नहीं
  - व्यक्तिगत स्तर
  - सामाजिक
  - प्रशासनिक

स्वच्छ भारत मिशन

- क्या किया जाना चाहिए < व्यक्तिगत, सामाजिक, प्रशासनिक
  - शिक्षा के स्तर
- दोनों के समन्वय से 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'

स्ट्रेंजर थिंग्स फिल्म में दोगामी दुनिया

Main Body

वास्तविकता की दुनिया क्या?
इसकी क्या-क्या सीमाएँ हो सकती हैं?
- व्यक्तिगत → समाजीकरण, मूल्य, क्षमता
- समाज < पाश्चात्य / भारतीय
- देश-काल तक सीमित
- परिवर्तन संभव
- विनाशशील / समाप्य
- वर्तमान जगत

भौतिक

- strange things
- मेटावर्स
- Doctor strange
- मि. इंडिया
- टैगोर
- अरविन्द

इंसानी सभ्यता का विकास

कल्पना की दुनिया क्या
असीमता क्यों
- देश-काल से परे
- मानसिक
- परिवर्तनशील
- सीमाओं से परे

मनोवैज्ञानिक
- बच्चे
- दार्शनिक
- वैज्ञानिक
- कलाकार
- कवि
- लेखक

तकनीकी प्रौद्योगिकी विकास

- कल्पना का सभ्यता को योगदान

- क्या इन दोनों का कुछ संबंध है?
- वास्तविकता से कल्पना या कल्पना से वास्तविकता या समानांतर प्रक्रिया है?
- निर्मिति हेतु कल्पना का वास्तविकता में परिणत होना आवश्यक
  - आविष्कार, नए सुधार, व्यक्तिगत उन्नति
- समाज में कल्पना हेतु प्रयास किए जाना

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वास्तविकता की दुनिया की अपनी सीमाएँ हैं; कल्पना की दुनिया असीम है

नेटफ्लीक्स पर आई वेब सीरीज 'लॉक एंड की' में 'दीमागी चाबी' की सहायता से बच्चे द्वारा अपने ही दीमाग में प्रवेश किया जाता है / स्वयं के दीमाग में प्रवेश करने के बाद वह वास्तविक दुनिया की तुलना में असीम संभावनाएँ देखता है /

इसी प्रकार की एक सीरीज 'स्ट्रैन्ज थिंग्स' में मनोवैज्ञानिक एवं काल्पनिक स्तर पर बच्चों द्वारा समस्याओं एवं गुत्थियों को सुलझाने का प्रयास किया जाता है /

उपर्युक्त वर्णित दोनों दृष्टांतों की सहायता से कल्पना की असीम

Don't write anything this margin (इस हाशिए में कुछ मत लिखें)

संभावनाओं और उसके परिणामों के बारे में बताने का प्रयास किया गया है।

निबंध के आगामी खंडों में वास्तविकता एवं कल्पना क्या है? वास्तविकता को सीमित तथा कल्पना को असीमित क्यों कहा गया है? क्या वास्तविकता और कल्पना के मध्य किसी प्रकार का संबंध स्थापित किया जा सकता है? इत्यादि बातों का वर्णन किया जाएगा।

सर्वप्रथम वास्तविकता क्या है और इसे सीमित क्यों माना जाता है? इसका उत्तर जानेंगे। सामान्य अर्थों में जो भौतिक एवं वैचारिक स्तर पर उसका वास्तविक जगत में विद्यमान होना, 'वास्तविकता' की कसौटी है। उदाहरण के लिए आम का वृक्ष होना, चिंतनशील मनुष्य का होना।

वास्तविकता की सबसे बड़ी सीमा उसका अस्तित्ववान होना ही माना जाता है। अस्तित्ववान मानने से वह कई प्रकार की भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सीमाओं से बंध जाता है। विशिष्ट प्रकार की जलवायु सभ्यता व समाज के रीति-रिवाज उसे परिसीमित करते हैं।

'अस्तित्ववान' के बाद वास्तविक सत्ता व देश-काल तक ही सीमित रह जाती है। बड़ा बदलाव करना मुश्किल होता है। जैसे → वैचारिक स्तर पर मैं तीन टांगों का इंसान सोच सकती हूँ, वास्तविक स्तर पर यह संभव नहीं।

वास्तविकता एक समाज विशेष के मूल्यों, सिद्धान्तों इत्यादि से निर्धारित होती है। इसके अतिरिक्त वास्तविकता सामान्य, विनाशशील व नश्वर होती है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

उपर्युक्त सभी प्रकार की सीमाओं से बंधे होने के कारण वास्तविकता सीमित होती है। वास्तविकता वस्तुनिष्ठ होती है।

वास्तविकता के विपरीत कल्पना, वास्तव की पूर्वपेक्षा या पूर्वमान्यता है। कल्पना मनो-वैज्ञानिक या वैचारिक स्तर की सत्ता है। कल्पना की कोई सीमा नहीं होती है। कल्पना मनुष्य की सर्वाधिक शक्तिशाली शक्तियों में से एक मानी जाती है।

कल्पना की असीमता के कई कारण माने जा सकते हैं। कल्पना पूर्णतः आत्मनिष्ठ व मानवीय होती है। व्यक्तिगत स्तर पर कल्पना का स्तर भिन्न-भिन्न देखने को मिलता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कल्पना विभिन्न प्रकार की भौगोलिक सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सीमाओं से मुक्त होती है। हालांकि कल्पना का हम सभी कारकों से निर्धारण संभव है, किन्तु नियंत्रण नहीं किया जा सकता। उदाहरणार्थ; कल्पना के स्तर पर समाज के विपरीत सोचने पर कोई नियंत्रण नहीं।

कल्पना व्यक्तिगत, देश-काल से परे, नित्य परिवर्तनशील होती है, इसलिए यह असीम मानी जाती है। बच्चों में दार्शनिकों, लेखकों, कवि, वैज्ञानिकों एवं कलाकारों मे कल्पना का स्तर उच्च होता है।

कल्पना के दो पक्ष हैं। एक नकारात्मक पक्ष, दूसरा; सकारात्मक पक्ष। नकारात्मक पक्ष मे; पागल, मूर्खों एवं अलौकिक मानवों को शामिल किया जाता है। सकारात्मक पक्ष में दार्शनिकों, वैज्ञानिकों इत्यादि

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

को सम्मिलित किया जाता है। ध्यान रहे यदि सकारात्मक पक्ष के तत्वों द्वारा कल्पना शक्ति का दुरुपयोग किया जाए तो वह नकारात्मक पक्ष में मानी जाएगी।

वास्तविकता एवं कल्पना की ससीमता और असीमता को जानने के बाद हम देखेंगे कि क्या वास्तविकता और कल्पना में किसी प्रकार का संबंध पाया जाता है? यदि संबंध है तो वह किस प्रकार का संबंध होगा पूर्वापर / सहचर ?

कुछ लोगों / मनो-वैज्ञानिकों का मानना है कि हम जैसा सोचते हैं या जैसी कल्पना करते हैं, व्यवहारिक रूप में वैसी उत्पत्ति हो जाती है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

दूसरी तरफ यह माना जाता है कि वास्तविक धारणाओं के अनुरूप ही हम कल्पना करते है, बिना वास्तविकता के कल्पना का कोई अस्तित्व नही।

सर्वप्रथम कल्पना के अनुरूप वास्तविकता की उत्पत्ति के पक्ष को जानने का प्रयास करेंगे। ऐतिहासिक कालक्रम पर दृष्टि डाले तो मानव की कल्पनाशीलता का ही परिणाम रहा कि आग की खोज, पहिये की खोज की। और इसी कल्पनाशीलता के परिणामस्वरूप बुलेट ट्रेन, स्काई कार इत्यादि का विचार आया।

दार्शनिक स्तर पर भी विभिन्न प्रकार की कल्पनाओं के बाद ही वास्तविक सिद्धान्तों की स्थापना की गई। डेकार्त का आत्म विचार, शंकर का ब्रह्म विचार।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

सामाजिक स्तर पर देखे तो भिन्न भिन्न प्रकार के रीति-रिवाज, धार्मिक विश्वास इत्यादि सर्वप्रथम कल्पना या वैचारिक स्तर पर उत्पन्न हुए, उसके बाद वास्तविक सत्ता के रूप में मान लिया गया। उदाहरण के लिए। भगवान का अस्तित्व, कर्म-नियम, पुनर्जन्म इत्यादि अवधारणाएँ।

उपर्युक्त दृष्टांतों के बाद हम इस पक्ष का अवलोकन करेंगे कि वास्तविकता कल्पना के अनुरूप नहीं बल्कि कल्पना वास्तविकता के अनुरूप उत्पन्न होती है।

व्यक्तिगत स्तर पर देखे तो मनुष्य मस्तिष्क खाली स्लेट की भाँति होता है। अनुभवों के बाद प्राप्त सामग्री के बाद ही वह कल्पना कर पाता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

बिना वास्तविक वस्तुओं के वह कल्पना नहीं कर सकता। उदाहरणार्थ: मनुष्य द्वारा कुछ अलौकिक एवं आत्मीय अनुभव के आधार पर ईश्वर जैसी सत्ता की कल्पना की गई।

सामाजिक स्तर पर सामाजिक स्थितियों, समस्याओं के अवलोकन के बाद वह विभिन्न प्रकार की कल्पनाओं के माध्यम से नई नई विचारधाराओं की स्थापना करने में सफल हुए।

वैज्ञानिक शोध व अनुसंधान तो पूर्णत: आगमनात्मक पद्धति पर निर्भर होते हैं। प्रथम स्तर पर वास्तविक वस्तुओं के साथ अभ्यास किया जाता है, तत्पश्चात कल्पना के स्तर पर पहुँचते हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

विभिन्न साहित्यिक एवं कला क्षेत्र के कलाकार, लेखक एवं कवियों को भी इसी श्रेणी में रखा जा सकता है। पहले वे वास्तविक जगत का अनुभव करते हैं, फिर अपनी कल्पना का प्रयोग कर उसे कला रूप में अभिव्यक्त करते हैं।

उपर्युक्त दोनों पक्षों को जानने एवं वर्णित करने के बाद एक पक्ष इन दोनों को समानांतर प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करता है।

जगत में प्रत्येक व्यक्ति विचारशील होने के साथ-साथ कल्पनाशील है। और इसी का परिणाम है कि आग जलाने से आग-प्रतिरोधक उपकरणों का आविष्कार कर लिया गया। जल

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

से न केवल पेयजल व कृषिगत आवश्यकताएँ पूरी नहीं की जाती, बल्कि बिजली उत्पन्न करने में इसका प्रयोग किया जाता है।

आदिम समाज से लोकतांत्रिक समाज की ओर विकास, कृषिगत क्रांति से प्रौद्योगिकी क्रांति तक का क्रमिक विकास यही प्रदर्शित करता है कि मानव कल्पना एवं वास्तविकता की प्रक्रिया समानांतर रूप में करता है।

उपर्युक्त सकारात्मक पक्षों के अतिरिक्त इसका एक नकारात्मक पक्ष भी है। मानवीय कल्पना शक्ति ने मानव को प्रकृतिवादी से भोगवादी, पर्यावरणवाद से मानववाद की ओर भी अग्रसर किया। इसके परिणामस्वरूप भिन्न-भिन्न प्रकार की भौतिक आपदाएँ

एवं पर्यावरणीय आपदाएँ देखने को मिलती है।

ऊपर वर्णित नकारात्मक पक्षों के प्रभाव को कम करने के लिए आवश्यक है कि मानव अपनी कल्पनाशीलता को औचित्य के साथ प्रयोग करे।

बढ़ते व्यक्तिवाद, उपभोक्तावाद एवं भौतिकतावादी संस्कृति ने मानव की कल्पना-शक्ति को धूमिल कर दिया है। तत्कालीन समय में गांधीजी का मानवतावाद एवं ग्रेटा थनबर्ग जैसे बच्चों का दृढ़-निश्चय, उपर्युक्त समस्याओं को समाधान करने में सहायक होगा।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

समाज में विकास, प्रगति एवं उत्थान के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक सृजनशील एवं सकारात्मक कल्पना को वास्तविकता में परिवर्तित किया जाए। इसके लिए समाज में नागरिकों के मध्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उत्पन्न किया जाना चाहिए।

भारतीय समाज में 65 प्रतिशत जनांकिकीय लाभांश है। यदि इन युवाओं की कल्पनाशीलता को सही दिशा व गति प्रदान की जाए तो वह दिन दूर नहीं जब भारत 'वैश्विक गुरु' कहलाएगा।

अतः काल्पनिक रूपी असीमता को वास्तविकता रूपी ससीमता में बदलने हेतु समग्र स्तर पर प्रयास किए जाने की अपेक्षा है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हॉलीवुड फिल्म 'ड्रमायी वॉर' के एक दृश्य में कल्पनाशीलता एवं वास्तविकता के समन्वय का प्रयोग कर समाविश्व की रक्षा की जाती है।

निबंध को निष्कर्षित करते हुए अंत में कल्पना की असीमता को वास्तविकता की सीमा में लाने पर ही इंसानी सभ्यता का विकास संभव हो पाता और विकास स्थायी बने रहने की संभावना रहती है।